# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में ज्ञान अवधारण तथा आत्म-सम्प्रत्यय क्षमता के विकास में परम्परागत शिक्षण एवं कला आधारित शिक्षण पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन

पीएच०डी० (शिक्षाशास्त्र) उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) को प्रस्तुत शोध प्रबधं की रूपरेखा


निर्देशिका
डॉ० चेतन प्यारी

शोधार्थी
अंकित गंगवार

डिपार्टमेन्ट ऑफ फाउन्डेशन ऑफ एजुकेशन, शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट **(डीम्ड विश्वविद्यालय)**
दयालबाग, आगरा-282010


2021

प्रस्तावना

शिक्षा मानव को एक उत्तम व्यक्ति बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। शिक्षा में ज्ञान, उत्तम आचरण, तकनीकी क्षमता या दक्षता, शिक्षण कलायें या पद्धतियॉ इत्यादि सम्मिलित रहती है। शिक्षा का कार्य समाज की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ज्ञान हस्तातंरण करना है। ज्ञान हस्तांतरण की प्रभावशाली प्रकिया निश्चित रूप से शिक्षक मे अन्तर्निहित कौशलों, तकनीकीयों एवं शिक्षण विधियों के प्रयोग पर निर्भर है। शिक्षण विधियाँ सामान्य कक्षा में शिक्षा प्रबन्ध रणनीतियों के लिए उपयोग की जाती है।

क्लार्क(1970) ‘‘शिक्षण के अन्तर्गत वे क्रियाए सम्मिलित होती हैं, जिनका प्रारूपण और निष्पादन छात्र या अधिगमकर्ता के व्यवहार में कुछ परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।’’

शिक्षण पद्धति की पसंद इस बात पर निर्भर करती है कि, आपकों क्या पसंद है? जैसे- आपका शैक्षिक दर्शन, कक्षा की जनसांख्यिकीय, विषय क्षेत्र और विद्यालय मिशन वक्तव्य आदि। शिक्षण विधियों को सामान्यः दो प्रमुख श्रेणियों में व्यवस्थित किया जाता है- परम्परागत शिक्षण विधियाँ, आधुनिक शिक्षण विधियाँ।

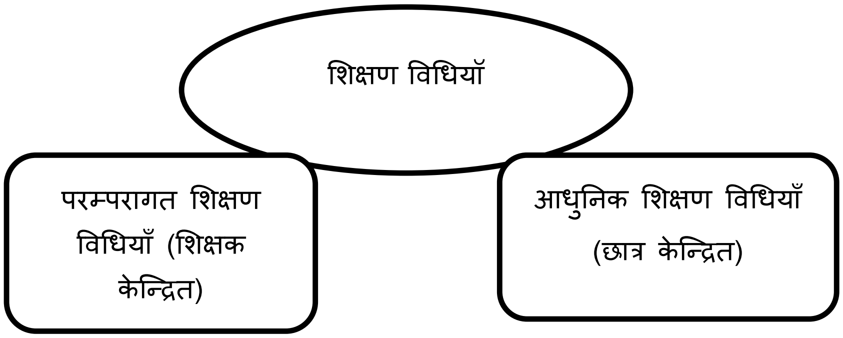


सुनैल(1994) ‘‘परम्परागत शिक्षण पद्धति वह है, जिसमें एक शिक्षक छात्रों को सस्मरण और सस्वर पाठ के माध्यम से सीखने के निर्देशन देता है।’’

नोवाक(1998) ‘‘पारंपरिक शिक्षण का सम्बधं शिक्षक के साथ सीखने के माहौल के नियत्रंक होने से है। शिक्षक के पास शक्ति और जिम्मेदारी होती है और वे प्रशिक्षक की भूमिका (व्याख्यान के रूप में) और निर्णय निर्माता की भूमिका (विशिष्ट परिणामों के रूप में) निभाते हैं। वे छात्रों को ‘ज्ञान छिद्र’ के रूप में मानते है, जिन्हे जानकारी से भरा जाना चाहिए अर्थात शिक्षक का मानना है कि, शिक्षण वह है, जो सीखने का कारण बनता है।’’

परम्परागत शिक्षण में शिक्षक मुख्य भूमिका में रहता है और छात्रों को सीखने के लिए नियन्त्रित परिस्थिति में समय-समय पर अनुदेशित और निर्देशित करता है। जिसमें छात्रों की निष्क्रिय भागीदारी रहती है। शिक्षण के लिए शिक्षक व्याख्यान, वर्णन, प्रश्नोत्तर जैसी विधियों का प्रयोग करता है।

एन.ई.आर.डी.सी.(2016) ‘‘ आधुनिक शिक्षण एक गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धति है, जिसका उपयोग शिक्षार्थियों को पूरी तरह से सम्मिलित करने के लिए किया जाता है। यह एक रचनावादी दृष्टिकोण है, क्योंकि यह शिक्षार्थी की शिक्षण और शिक्षण प्रक्रिया में सकिय भागीदारी के माध्यम से उसे ज्ञान और कौशल का निर्माण करने में सक्षम बनाती है।’’

आधुनिक शिक्षण पद्धति गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धति है। जिसे रचनावादी शिक्षण पद्धति भी कहा जाता है। जिनका उपयोग शिक्षार्थियों को पूर्ण रूप से शिक्षण प्रक्रिया में सम्मिलित करने के लिए किया जाता है। जिससे छात्रों की सक्रिय भागीदारी के द्वारा उनके ज्ञान कौशल के विकास को उत्तम बनाया जा सके। इन्ही उद्देश्यों एंव कारणों के फलस्वरूप वर्तमान में नवीन शिक्षण पद्धतियों के विकास को  प्रोत्साहित किया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में एक नवीन शिक्षण पद्धति को सम्मिलित किया गया है, जिसे कला एकीकृत या कला आधारित शिक्षण पद्धति कहा गया। कला आधारित शिक्षण विशेष रूप से कलाकार शिक्षकों द्वारा संचालित पाठ्यक्रय को प्रभावी बनाने, नेतृत्व को बढ़ाने, आत्मविश्वास को बढ़ाने, संप्रेषण को सुधारने और नवीन रणनीति विकसित करने मे सहयोग प्रदान करता है अर्थात कला-आधारित शिक्षण गैर कलात्मक विषयों में सीखने को बढ़ावा

देने  के लिए शैक्षिक कौशल के रूप में कलात्मक कौशल प्रक्रियाओं और अनुभवों के उद्देश्यपूर्ण उपयोग को संदर्भित करता है।

कला आधारित शिक्षा श्रृव्य-दृश्य एवं मूर्त कलाओं के आधार पर सीखने, निर्देश को संदर्भित करती है। कला आधारित शिक्षा में नृत्य, संगीत, रंगमंच, चित्रकला, शिल्पकला सुलेख इत्यादि प्रदर्शन कलाएं सम्मिलित हैं।

सी.बी.एस.ई.(2019)" कला एकीकृत  कक्षा अधिगम के आदान-प्रदान को आनन्दमय और रचनात्मक बनाता है और हमारी समृद्ध कला और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देता। हालॉकि, यह समझा जाता है कि, कला शिक्षा और कला एकीकृत शिक्षा पारस्परिक रूप से अनन्य है, लेकिन कला शिक्षा, कला एकीकरण अधिगम के अभिग्रहण हेतु एक आवश्यक अग्रदूत है।"

सुजन रिले(2014)"कला एकीकरण शिक्षण और अधिगम हेतु एक दृष्टिकोंण है, जिसमें कला के माध्यम से मानक सामग्री को पढ़ाया जाता है और समान रूप से मूल्यांकित किया जाता है।"

समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा का सरोकार एक सार्थक व उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक, शैक्षिक वातावरण और शैक्षिक तकनीकियों, विधियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत सरकार भी शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने के लिए समय-समय पर शिक्षा नितियों का निर्माण करती है। शिक्षा नीतियों को जमीनी स्तर पर सफल बनाने के लिए पठन-पाठन सामग्री का निर्माण किया जाता है। विद्यार्थियों की रूचि के अनुसार पठन-पाठन की व्यवस्था की जाती है तथा विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता को विकसित करने के लिए नित नये प्रयास किये जाते है, साथ ही यह प्रयास और प्रयत्न भी किये जाते है, कि जिससे शिक्षक एवं विद्यार्थियो के बीच सम्बन्ध दृढ़ हो, अतः शिक्षा और शिक्षा जगत को यह ध्यान रखना होगा कि, विद्यार्थियो का अपना रचनात्मक संसार होता है तथा विद्यार्थी की जीवन और वस्तुओं को देखने व परखने की अपनी दृष्टि और सीखने की गति होती है, अतः हमे

ऐसा वातवरण तैयार करने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थियो को पढ़ने-लिखने और आगे बढ़ने के अनेक अवसर प्राप्त हों।

वर्तमान समय में अध्यापन और अध्ययन के प्रति शिक्षकों और छात्रों में रूचि, उत्साह, रचनात्मकता आदि का अभाव है। इन्हीं सब पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में अन्य विषयों के साथ कला को एकीकृत किया गया है। जिससे कि शिक्षा को रूचिकर, उत्साहपूर्ण एवं रचनात्मक बनाया जा सके।

अध्ययन के चरो से सम्बन्धित पूर्व में हुए शोध अध्ययन इस प्रकार है -

| क्रम | शोधार्थी | वर्ष | शोध विषय | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | डॉ. शेंडकर, डी.टी. | 2019 | इफैक्ट ऑफ ट्रेडीशनल टीचिंग एण्ड को-आपरेटिव लर्निंग मैथड ऑन लांग जम्प परफोर्मेन्स | को-आपरेटिव लर्निंग विधि परम्परागत शिक्षण विधि से उत्तम है। को-आपरेटिव लर्निंग विधि से महिला एवं पुरुष दोनो के सीखने में सुधार आया है। |
| 2 | डॉ. शर्मा, आर.सी. | 2018 | ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ सम ट्रेडिशनल एण्ड मॉर्डर्न मैथोड ऑफ टीचिंग लर्निंग प्रोसेस | आधुनिक तकनीकी, प्रणाली एवं उपकरणों की सहायता से मन्दगति से सीखने वाले छात्रों को तीव्र गति से सीखने वाले छात्रों के साथ समायोजन करने में आसानी होती है। |
| 3 | पुंजलाम, जे. एफ | 2018 | द इम्पैक्ट ऑफ विजुअल आर्ट्स इन स्टूडेंट्स एकेडमिक परफोर्मेन्स | दृश्य कला या कला एकीकरण के उपयोग से उपलब्धि में सुधार होता है। दृश्य कला का कक्षा में उपयोग से छात्रों की सक्रिय भागीदारी आत्मविश्वास को विकसित किया जा सकता है। |
| 4 | ज्ञान,आर. और डॉ बेहरा, के. | 2018 | सेल्फ-कॉनसेप्ट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएशन स्टूडेटंस : एन इम्प्रीरिकल स्टडी | छात्रों में शैक्षिक योजनाओं हेतु आत्म-सम्प्रत्यय उपयोगी है। सिद्वो-कान्हो-बिरसा विष्वविद्यालय के पी.जी. छात्रों में आत्म-सम्प्रत्यय औसत स्तर का है। |
| 5 | अब्दुल, एम.एम. | 2017 | असिसमेण्ट ऑफ नॉलेज रिटेंशन एबिलिटी ऑफ अण्डरग्रेजुएट मेडिकल स्टूडेंट | ज्ञान को संग्रहित या अवधारणा हेतु सक्रिय शिक्षण माध्यम का उपयोग किया जाना चाहिए जिससे ज्ञान मस्तिष्क में लम्बी अवधि तक सग्रंहित रहता है। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 6 | चाई, सी. | 2017 | इंटीग्रेटिंग द आर्टस इन टू इग्लिंश लर्निंग : ए केस स्टडी ऑफ ई एफ एल लर्नर्स इन ए कनैडियन यूनीवर्सिटी | कला एकीकरण इंग्लिष भाषा सीखने में मार्गदर्शन और सहायता के रूप में कार्य करती है, छात्रों को रचनात्मक रूप से सीखने के लिए प्रेरित करती है तथा छात्रों को अपनी अभिव्यक्ति, विचार प्रदर्शित करने में सुधार करती हैं। |
| 7 | बल्लीउ, बी. और बिल्शी, एम. | 2017 | मॉर्डन टीचिंग वर्सेस ट्रेडिशनल टीचिंग अल्बीनिया टीचर्स बिटवीन चैलंजेस एण्ड च्वाइस | शिक्षक कक्षा में बहुत ही कम नीवन शिक्षण विधियों का प्रयोग करते है। शिक्षकों को शिक्षण कार्य हेतु अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो। |
| 8 | तुचेर,एस. डी. | 2017 | द इफेक्ट ऑफ आर्टस इण्टीग्रेशन ऑन लिट्रेसी कम्प्रीहसिंव अचीवमेण्ट | कला एकीरकण छात्रों को शिक्षा के साथ जोड़ कर रखने और कौशलों के विकास में मद्द करती है। छात्रों में आत्मविश्वास एव व्यक्तित्व पहचान दिलाने में भूमिका अदा करती है, सामाजिक, सहभागिता एवं संस्कृतिक को बढ़ावा देन और आजीवन सीखने के लिए नीव प्रदान करती है। छात्रों की उपलब्धि बढ़ाने में भी कला सहायक है। |
| 9 | स्टर्न्स,के.एस. | 2017 | रिलेशनशिप बिटवीन सेल्फ-कॉनसेप्ट, टीचर एक्सेपटेषन एण्ड एकेडमिक अचीवमेण्ट : एन एनालाइजिगं ऑफ सोसियल-इमोशनल वेल बीइगं एण्ड इट्स रिलेशन टू क्लासरूम परफॉर्मेसं | छात्रों में आत्म-सम्प्रत्यय का भावना उच्च होती है, तो उनकी शैक्षिक प्रगति भी उच्च होती है। |
| 10 | कोर्कमोज, टी.एस. और टॉय, बी. | 2016 | द इफैक्ट ऑफ कॉपरेटिव लर्निंग मैथड सिस्टमैटिक टीचिंग ऑफ स्टूडेंड अचीवमेंट एण्ड रिटेशन ऑफ नॉलेज सोसल स्टडीस लेसन | सहकारी, व्यवस्थित एवं निर्माणवादी शिक्षण छात्रों की उपलब्धि के बढ़ाने की प्रभावी विधियाँ है। जिससे छात्रों के ज्ञान अवधारण में सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। |
| 11 | मेहरद,ए. | 2016 | मिनी लिटरेचर रिव्य ऑफ सेल्फ-कॉन्सेप्ट | आत्म-सम्प्रत्यय व्यक्तियों के दृष्टिकोण पर प्रभाव डालता है। आत्म-सम्प्रत्यय वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण कारक के रूप में है। |
| 12 | अग्रवाल, एन.के और इस्लाम, एम.ए. | 2015 | नॉलेज रिटेंशन एण्ड ट्रांस्फर : हाउ लाइब्रेरीस मैनेज इम्पलायर्स लिविंग एण्ड ज्वाइनिंग | पुस्तकालय ज्ञान अवधारणा और ज्ञान हस्तान्तरण के लिए एक उत्तम साधन है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 13 | अल-हैडिथी, टी.एम. | 2015 | दी ट्रेडिशनल वर्सेस दी मॉडर्न ट्रांसलेशन क्लासरूम : ए नीड फार न्यू डाइरेक्शन इन द यू एई अण्डरग्रेजुएट ट्रांसलेशन प्रोग्रामस | विश्वविद्यालय में संचालित स्नातक अनुवादक पाठ्यक्रम में वांछित सुधार की आवश्यकता है। जिसके लिए सीखने की विधियों में परिवर्तन किया जाना चाहिए। पारम्परिक अनुवाद और आधुनिक अनुवाद में से आधुनिक अनुवाद को प्रभावी बताया कि यह छात्रों की व्यक्तिपरक, व्याख्यात्मक एवं बौद्धिक शक्ति को बढ़ाता है। |
| 14 | धनपाल,एस, कननापथी, आर. और मस्तान,जे. | 2014 | ए स्टडी टू अण्डर स्टैण्ड द रोल ऑफ विजुअल आर्टस इन द टीचिंग एण्ड लर्निंग ऑफ साइस | विज्ञान विषय के शिक्षण में कला एकीकरण से शिक्षार्थियों के शैक्षिक सामाजिक एवं भावनात्मक पक्ष विकसित होते है। छात्रों की रचनात्मकता एवं कौशलों को बढ़ाने के लिए कला मुख्य पक्ष के रूप में हो सकता है। शिक्षक विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम को दृश्यकला के द्वारा सिखाये जाने का उत्तम मानते है। |
| 15 | स्टर्क, जे.सी. | 2010 | सेल्फ-कॉनसेप्ट एण्ड सेल्फ-स्ट्रीम इन एडोलेसंट्स विद लर्निगं डिसैबिलिटीस : द ग्रेजूएट स्कूल यूनिवर्सिटी ऑफ विसिटन-स्टाउट | आत्म-सम्प्रत्यय और आत्म-सम्मान जीवन के महत्वपूर्ण घटक हैं। सीखने की अक्षमता रखने वाले छात्रों में सामान्य छात्रों की तुलना में अधिक नकारात्मक आत्म-सम्प्रत्यय होता है। |
| 16 | तुफेकी, एस. और डेमिरल, एम. | 2009 | द इफेक्ट ऑफ ब्रेनबेस्ड लर्निंग ऑन अचीवमेंट, रिटेंशन, एटिट्यूड एण्ड लर्निंग प्रोसेस | बुनियादी एवं सामान्य स्तर की शिक्षा में परम्परागत शिक्षण और मस्तिष्क आधारित सीखने की गतिविधियों का अवधारण पर समान प्रभाव पड़ा, लेकिन उच्च स्तर की शिक्षा पर मस्तिक आधारित शिक्षण का अवधारणा पर सकारात्मक प्रभाव रहा। |
| 17 | वेल्टमैन, डी. | 2007 | ए कम्परीजन ऑफ ट्रेडिशनल एण्ड एक्टिव लर्निंग मैथड: एन इम्पीरिकल इनवैस्टीगेशन यूटीलाजिंग ए लीनियर मिक्सड मॉडल | परम्परागत रूप से सीखने की अपेक्षा सक्रिय वातावरण में सीखने से छात्रों की उपलब्धि उत्तम होती है। शिक्षण की तीनों विधियों (परम्परागत, आंशिक क्रिया-प्रधान और पूर्ण क्रिया प्रधान) से सीखने वाले छात्रों के सीखने पर अन्तर है। यह उच्च ग्रेड वाले छात्र सक्रिय विधि से सीखते है तो उनकी उपलब्धि औसत रही जबकि निम्न ग्रेड वाले छात्रों की उपलब्धि में वृद्धि हुई। |
| 18 | डीमॉश, के. | 2002 | हाउ आर्टस इंटीग्रेशन सर्पोटस | कला एकीकृत शिक्षण छात्रों की उपलब्धि को |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | और मैरिस, टी. | | स्टूडेंट लर्निंग स्टूडेंटस शेड लाइट ऑन द कनेक्शन | दृढ़ता प्रदान करती है, कला एकीकरण छात्रों को अनुभवात्मक दृष्टि से व्यापक रूप से सीखने में सहायक है। |

कला आधारित शिक्षण के पूर्व के अध्ययन जोविता(2018) ने दृश्य कला का छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन, चाई(2017) ने कला एकीकरण अंग्रेजी भाषा सीखने में सहयोग तुचेर(2017) ने कला एकीकरण से शैक्षिक उपलब्धि में प्रगति, धनपाल, रवी और जमीला(2014) ने दृश्य कला का शिक्षण और अधिगम पर प्रभाव देखा तथा डीमॉश और मैरिस(2002) ने कला एकीकरण छात्रों के अधिगम में सहायक के रूप में किये गये हैं।

पूर्व में जो परम्परागत शिक्षण के अध्ययन डॉ शेंडकर(2019) ने परम्परागत शिक्षण और सहकारी शिक्षण विधि का अधिगम प्रदर्शन पर, डॉ0 शर्मा(2018), बि ल्शी और वल्लीउ(2017) तथा अल-हैडिथी(2015) ने परम्परागत शिक्षण और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का शिक्षण प्रभावशीलता पर तथा वेल्टमैन(2007) ने परम्परागत शिक्षण और क्रिया आधारित शिक्षण के मध्यय तुलनात्मक, अध्ययन किये।

ज्ञान अवधारण से सम्बन्धित पूर्व में जो अध्ययन अब्दुल(2017) ने मेडिकल छात्रों की ज्ञान अवधारण क्षमता पर कोर्कमोज(2016) ने सहकारी शिक्षण का ज्ञान अवधारण पर प्रभाव, अग्रवाल(2015) ने पुस्तकालय का ज्ञान अवधारण और हस्तान्तरण पर अध्ययन तथा तुफेकी(2009) ने मस्तिष्क आधारित अधिगम का अवधारण, उपलब्धि, अधिगम प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव पर अध्ययन किये।

आत्म-समप्रत्यय के पूर्व के अध्ययन ज्ञान और बेहरा(2018) ने परास्नातक छात्रों के आत्म समप्रत्यय पर; स्टर्न्स(2017) ने सामाजिक -संवेगो का आत्म समप्रत्यय, टीचिंग एक्सेपटेषन और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध, मेहरद(2016) ने आत्म समप्रत्यय का व्यक्तियों के दृष्टिकोण पर तथा स्टर्क(2010) ने सीखने की अक्षमता रखने वाले छात्रों पर आत्म समप्रत्यय और आत्म सम्मान के प्रभाव का तुलनात्कम, अध्ययन किये।

उक्त अध्ययनों के तथ्यों व निष्कर्ष के अवलोकन के पश्चात अध्ययनकर्ता ने पाया कि कला आधारित शिक्षण के अधिंकाशतः अध्ययन उपलब्धि, शैक्षिक प्रगति, रूचि पर हुए हैं, अन्य चरों से सम्बंधित अध्ययन अध्ययनकर्ता के संज्ञान मे नही आये है। कला आधारित शिक्षण के अधिकांश अध्ययन विदेश में हुए है भारत में कला आधारित कम ही हुए है। परम्परागत शिक्षण का सहकारी शिक्षण, क्रिया आधारित, आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन उपलब्धि, प्रभावशीलता रूचि पर ही हुए है। ज्ञान अवधारण से सम्बन्धित अध्ययन अत्यधिक नही हुये है और जो भी अध्ययन हुए है वह शिक्षा के क्षेत्र में न होकर स्वास्थ्य और सेवा क्षेत्र में हुए है। शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान अवधारण से जो अध्ययन हुए हैं, वह सहकारी शिक्षण और मस्तिक आधारित अधिगम पर हुए है। कला-आधारित शिक्षण पर कोई अध्ययन अध्ययनकर्ता के संज्ञान में नहीं आया। आत्म समप्रत्यय का शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव देखा गया है, किन्तु कला आधारित शिक्षण से आत्म-समप्रत्यय पर वाले विकास से सम्बन्धित अध्ययन अध्ययनकर्ता के संज्ञान में नही आये हैं।

अतः उपर्युक्त पहलुओ या पक्षों को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ता को यह आवश्यकता एवं जिज्ञासा हुई कि, क्या माध्यमिक स्तर पर कला आधारित शिक्षण और परम्परागत शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान अवधारण, आत्म-समप्रत्यय का प्रभाव रहेगा? अतः तथ्यों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करने का निश्चय किया ।

समस्या का औचित्य

जब कोई शोध अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है तब उक्त शोध अध्ययन की उपादेयता, महत्व, प्रकृति इत्यादि का औचित्य सिद्ध करना आवश्यक बन जाता है। शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों एवं निष्कर्ष शिक्षा जगत को किस प्रकार प्रभावित करेंगे?

वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन एवं वैश्वीकरण की आवश्यकताओं के अनुरूप सभी को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा को प्रदान करने का पूर्णतः दायित्व शिक्षकों पर होता है। शिक्षक अपने

द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए कक्षा-कक्ष में विभिन्न शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करता है जिससे वह शैक्षिक उद्दश्यों को प्राप्त कर सकें, लेकिन शिक्षा के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली विभिन्न शिक्षण पद्धतियाँ समय, काल और परिस्थिति में परिवर्तन होने से संकुचित और सीमित हो जाती है। जिन्हे प्रत्येक परिस्थिति या समय पर उपयोग या प्रयोग में लाना सम्भव नही हो पाता है, जबकि प्रभावशाली शिक्षण इस बात पर निर्भर करता है, कि शिक्षक द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली शिक्षण पद्धितियों कितनी उत्कृष्ठ है? तथा शिक्षण प्रकिया में शिक्षक विद्यार्थियो के साथ किस प्रकार जुड़े रहता है।

कला-साहित्य को समाज का प्रतिनिधित्व करने वाला कहा जाता है जो कि मानव के सभी पहलुयो को चित्रांकित करता है। कला एक ऐसी विधा है, जो मानव जीवन की जीवंत अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती है। राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक क्षेत्रों में व्याप्त मानवीय जीवन की समस्याओं, विषमताओं, संघर्षो, विसंगतियों को कला के माध्यम से सभ्य समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। कला का जनवादी स्वरूप होने के कारण राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने नई तालीम अर्थात बुनियादी शिक्षा योजना की वकालत की। जिसमें विद्यार्थियो के शरीर, हृदय, मन, आत्मक चेतन का सामंजस्यपूर्ण कर सकें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा(2005) में कला शिक्षा के महत्व को उजागर करते हुये स्पष्ट रूप से इंगित किया गया है कि, कला के महत्व की अधिक समय तक उपेक्षा नही कर सकते और हमें बच्चों में कला सम्बन्धी जागरूकता व रूचि के प्रचार प्रसार और प्रोत्साहन के लिए सारे सम्भावित संसाधन और सारी ऊर्जा लगा देनी चाहिए। भारत कला, धर्मनिरपेक्षता और सांस्कृतिक विविधता का जीता जागता उदाहरण है। उसमें देश के हर भाग के लोक और शास्त्रीय गायन, नृत्य, संगीत, पुतले बनाना, मिट्टी का काम आदि शामिल है। इनमें से किसी भी कला का अध्ययन हमारे विद्यार्थियो के ज्ञान को केवल समृद्ध करेगा, बल्कि वह विद्यालय के बाहर भी जीवन भर विद्यार्थियो के काम आयेगा।

अतः शिक्षकों द्वारा छात्रों को प्रदान कि जाने वाली शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु नवीन शिक्षण पद्धति का प्रतिपादन हुआ। जिसमें से एक में विभिन्न विषयों को कला के साथ एकीकृत किया गया है, जिससे शिक्षा और शिक्षण मे गुणात्मक सुधार कर, विद्यार्थियो के अधिगम को रूचिकर मनोरंजन युक्त एवं प्रभावशाली बनाया जा सकें। शिक्षण को प्रभावी बनाने और शिक्षकों की व्यवसायिक कुशलता में वृद्धि करने में सहायक है। शिक्षक का मुख्य हथियार उसका ज्ञान और प्रयोग में लायी जाने वाली शिक्षण पद्धतियॉ है। अतः ज्ञान को छात्रों तक सम्प्रेषित करने के लिए शिक्षण पद्धतियों की क्षमता एवं कुशलता महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती है। यदि शिक्षण पद्धतियाँ या विधियॉ शिक्षक और छात्रों से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान न कर सकें, तो यह भावी पीढ़ी के भविष्य के लिए न्यायोचित नही होगा। अतः इन्ही पक्षों को दृष्टिगत रखते हुए अध्यनकर्ता के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि, क्या कला एकीकरण से  विद्यार्थियो के सीखने की क्षमता में प्रगति होगी?  क्या वर्तमान समय में कला एकीकरण पद्धति प्रासंगिक है? क्या कला आधारित शिक्षा छात्रों के ज्ञान अवधारण रखने में सक्षम बनाती है? आत्म-सम्प्रत्यय को विकसित करने में कला एकीकरण की क्या भूमिका है? कला एकीकरण से शिक्षा जगत को क्या लाभ होगा? शिक्षण को किस प्रकार प्रभावी बनाया जा सकता है? कला आधारित शिक्षण व परम्परागत शिक्षण के उत्पाद एवं परिणाम क्या होंगे? परम्परागत शिक्षण और कला आधारित शिक्षण में से कौन-सी पद्धति अच्छे परिणाम देने में सक्षम है? इन्ही उक्त प्रश्नों के उत्तर और परिणाम जानने हेतु अध्ययनकर्ता ने कला आधारित शिक्षण व परम्परागत शिक्षण का विभिन्न चरो के साथ  तुलनात्मक अध्ययन करने को मूर्त रूप प्रदान किया।

शोध प्रश्न

1. क्या माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो में ज्ञान अवधारण के विकास में कला आधारित शिक्षण पद्धति अपना योगदान दे सकती है?

2. क्या कला आधारित शिक्षण विद्यार्थियो के आत्म-सम्प्रत्यय को बढ़ाने मे योगदान दे सकती है?

3. क्या परम्परागत शिक्षण और कला आधारित शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान अवधारण के विकास में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अन्तर पड़ता है?

4. क्या परम्परागत शिक्षण और कला आधारित शिक्षण का विद्यार्थियो के आत्म-सम्प्रत्यय के विकास क्या प्रभाव पड़ता है?

5. क्या कला आधारित शिक्षण पद्धति, परम्परागत शिक्षण पद्धतियों से उत्तम हैं?

समस्या कथन :-

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो में ज्ञान अवधारण तथा आत्म-सम्प्रत्यय क्षमता के विकास में परम्परागत शिक्षण एवं कला आधारित शिक्षण पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण

कार्यात्मक परिभाषा

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीः-

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से तात्पर्य उन विद्यार्थियो से है, जो कक्षा-9 मे अध्ययनरत है, तथा जिनकी आयु 12 से 16 वर्ष के आयु के मध्य है।

सैद्धान्तिक परिभाषा

ज्ञान अवधारणा -

ज्ञान अवधारण में ज्ञान का संगठन सम्मिलित है, जिसका उपयोग पूर्व संगठित ज्ञान के आधार पर पुनः प्रयोग में किया जाता है। वाल्श एंड अंगसॉन(1991)

कार्यात्मक परिभाषा

ज्ञान अवधारणा -

ज्ञान अवधारण से तात्पर्य, मस्तिष्क के अन्दर सूचना तन्त्र के माध्यम से ज्ञान को प्रभावी ढंग से समझने, सम्बद्ध करने उस ज्ञान को पुनः उपयोग में लाने से है।

सैद्धान्तिक परिभाषा

आत्म-सम्प्रत्यय -

आत्म-प्रत्यय वे प्रतिमायें हैं, जो व्यक्ति स्वयं अपने सम्बन्ध में रखते हैं। आत्म-प्रत्यय में व्यक्ति के वे विश्वास होते हैं, जो कि व्यक्ति अपनी शारीरिक मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के सम्बन्ध में रखता है।

हरलॉक(1978)

कार्यात्मक परिभाषा

आत्म-सम्प्रत्यय -

आत्म-सम्प्रत्यय से तात्पर्य व्यक्ति का अपने विषय में आत्मधारणा से है, जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार, योग्यताओं, एवं विशेषताओं का मूल्य आंकलन रखता है।

सैद्धान्तिक परिभाषा

परम्परागत शिक्षण -

शिक्षण का पारंपरिक दृष्टिकोण, जहॉ शिक्षक ज्ञान के स्त्रोत के रूप में कार्य करते हैं, जबकि शिक्षार्थी निष्क्रिय-गृहीता के रूप में कार्य करते हैं। डॉ.अब्दुल्ला कुजु(1997)

कार्यात्मक परिभाषा

परम्परागत शिक्षण -

परम्परागत शिक्षिण से तात्पर्य उन शिक्षण विधियों से है जो कई वर्षो से शिक्षण हेतु प्रयुक्त हो रही है और जिनके द्वारा शिक्षक कक्षा-कक्ष में विद्यार्थियों पर नियन्त्रण रखता है।

सैद्धान्तिक परिभाषा

कला आधारित शिक्षण -

शिक्षण का ऐसा उपागम जिसमें छात्र कला के माध्यम से स्वयं करके तथा रचनात्मक प्रक्रिया में संलग्न रहकर सीखने की समझ प्रदर्शित करते हैं और इन दोनां उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कला को अन्य विषयों व कार्यो से जोड़ा जाता है। सिर्ल्वस्टेन एंड लैने(2010)

कार्यात्मक परिभाषा

कला आधारित शिक्षण -

कला आधारित शिक्षण से तात्पर्य- शिक्षक द्वारा गैर-कला विषयों को विभिन्न कलाओं (चित्रकला, शिल्पकला आदि) के एकीकरण या समन्वय से विकसित शिक्षण पद्धति के द्वारा शिक्षा प्रदान करने से है।

उद्देश्य :-

- कला-आधारित शिक्षण पद्धतियों का विद्यार्थियों में होने वाले ज्ञान अवधारण एवं आत्म-सम्प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- परम्परागत शिक्षण पद्धतियों का विद्यार्थियों में होने वाले ज्ञान अवधारण एवं आत्म-सम्प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन अध्ययन करना।
  - परम्परागत शिक्षण पद्धतियों और कला-आधारित शिक्षण पद्धतियों का विद्यार्थियों के ज्ञान अवधारण एवं आत्म-सम्प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

- परम्परागत शिक्षण पद्धतियों और कला-आधारित शिक्षण पद्धतियों का विद्यार्थियों के ज्ञान अवधारण पर काई सार्थक प्रभाव नही होगा।

- परम्परागत शिक्षण पद्धतियों और कला-आधारित शिक्षण पद्धतियों का विद्यार्थियों के आत्म-समप्रत्यय पर काई सार्थक प्रभाव नही होगा।

शोध अध्ययन के चर

स्वतन्त्र चर - परम्परागत शिक्षण पद्धति एवं कला-आधारित शिक्षण पद्धति।

आश्रित चर - ज्ञान अवधारण, आत्म-सम्प्रत्यय

नियंत्रित चर -

| चरो की श्रेणी | चरो के नाम | नियत्रंण करने की तकनाकी का प्रयोग | नियत्रंण की विधि |
|---|---|---|---|
| विषय सम्बन्धित चर | उपलब्धि, लिगं | न्यादर्श चयन | सादृश्यीकरण, यादृच्छिककरण |
| | प्रोत्साहन | सहयोग स्थापित कर | शोधकर्ता द्वारा |
| पर्यावरणीय सम्बन्धित चर | कक्षा वातावरण | सहयोग स्थापित कर | शोधकर्ता द्वारा |
| | प्रकाश | स्थिरता | शोधकर्ता द्वारा |
| अनुक्रम सम्बन्धित चर | परीक्षण समय | विलोपन | मनोवैज्ञानिक रूप से शोधकर्ता द्वारा |
| | परीक्षण प्रशासन | स्थिरता | शोधकर्ता द्वारा |

शोध परिसीमांकन

- प्रस्तुत शोध अध्ययन दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट आगरा से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों मे से किसी एक माध्यमिक विद्यालय तक ही सीमित रहेगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर के कक्षा-9 के विद्यार्थियों तक सीमित रहेगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग केवल विज्ञान विषय (जीव विज्ञान) के पाठ्यक्रम तक सीमित रहेगा।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में कला आधारित शिक्षण में चित्रकला, शिल्पकला, (श्रव्य-दृश्य कला) विधि का ही प्रयोग किया जायेगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन कला आधारित शिक्षण पद्धति से संबन्धित 30 पाठ योजना के शिक्षण कार्य तक सीमित रहेगा।

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

शोध अध्ययन हेतु निम्न प्रक्रिया सम्भावित है-

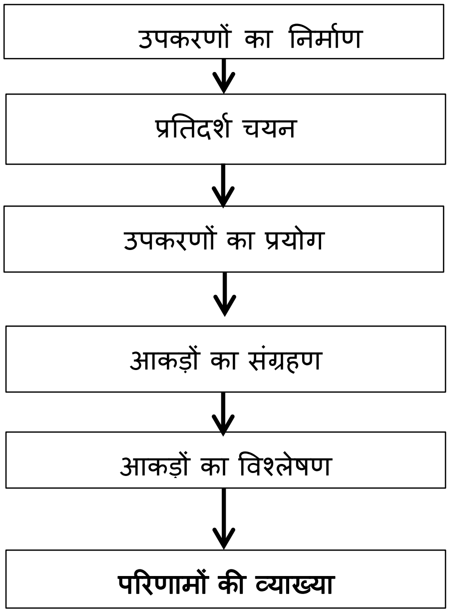


शोध अध्ययन विधि -

शोध अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक विधि का उपयोग किया जायेगा।

शोध अभिकल्प –

| प्रथम चरण - योजना निर्माण | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| द्वितीय चरण - कार्यान्वयन | | | | | | तृतीय चरण- मूल्यांकन |
| समूह | पूर्व परीक्षण | | उपचार | | | पश्च परीक्षण |
| | परीक्षण | न्यादर्श | प्रयोग | समय | पाठ योजना | परीक्षण |
| नियंत्रित समूह | 1 स्वनिर्मित ज्ञान अवधारण प्रश्नावली 2 आत्म-सम्प्रत्यय प्रश्नावली | 40 N | परम्परागत शिक्षण | 40 मिनट | 30 N | 1 स्वनिर्मित ज्ञान अवधारण प्रश्नावली 2 आत्म-सम्प्रत्यय प्रश्नावली |
| प्रायोगिक समूह | 1 स्वनिर्मित ज्ञान अवधारण प्रश्नावली 2 आत्म-सम्प्रत्यय प्रश्नावली | 40 N | कला आधारित शिक्षण सम्बन्धित पाठ योजना | 40 मिनट | 30 N | 1 स्वनिर्मित ज्ञान अवधारण प्रश्नावली 2 आत्म-सम्प्रत्यय प्रश्नावली |

जनसंख्या

शोध अध्ययन मे दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट आगरा से सम्बद्ध समस्त माध्यमिक विद्यालय और उसमें अध्ययनरत् विद्यार्थी शोध अध्ययन की जनसंख्या होंगे।

न्यादर्श और न्यादर्श विधि

शोध अध्ययन हेतु दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट आगरा से सम्बद्ध किसी एक माध्यमिक विद्यालय का उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा चयन किया जायेगा तथा इस माध्यमिक विद्यालय के कक्षा-9 मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की उपलब्धि, लिगं के आधार पर 80 विद्यार्थियों का सादृश्यीकरण किया जायेगा, जिसके लिए गत वर्ष के परीक्षा परिणाम के द्वारा छात्र व छात्राओं (लिगं) की उपलब्धि के आधार पर युग्म (जाडे या सुमेलित) बनाकर, इन जाड़ो का यादृच्छिक विधि द्वारा समूह चयन किया जायेगा।

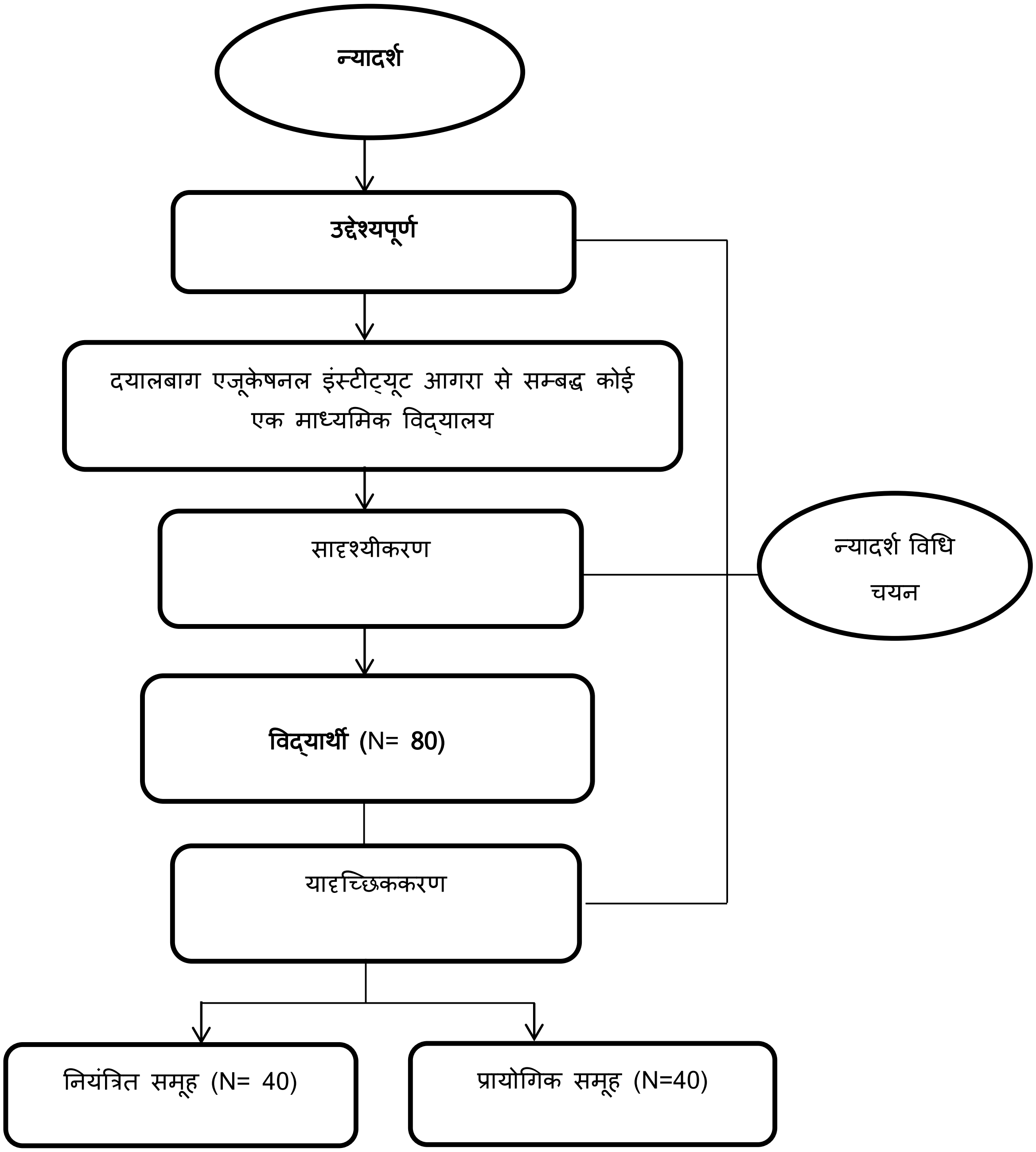


**शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण**

**प्रस्तुत अध्ययन के विभिन्न चरों से सम्बधित आकड़ों के संग्रहण हेतु निम्न शोध उपकरणों का उपयोग किया जायेगा**

**-**

**ज्ञान अवधारण - ज्ञान अवधारणा का मानकीकृत शोध उपकरण उपलब्ध नही होने पर विद्यार्थी द्वारा स्वनिर्मित ज्ञान अवधारण प्रश्नावली का उपयोग किया जायेगा।**

**आत्म-सम्प्रत्यय- आत्म-सम्प्रत्यय के आकड़ों के संग्रहण हेतु डॉ. राज कुमार सारस्वत के आत्म-सम्प्रत्यय उपकरण (2011) का उपयोग किया जायेगा।**

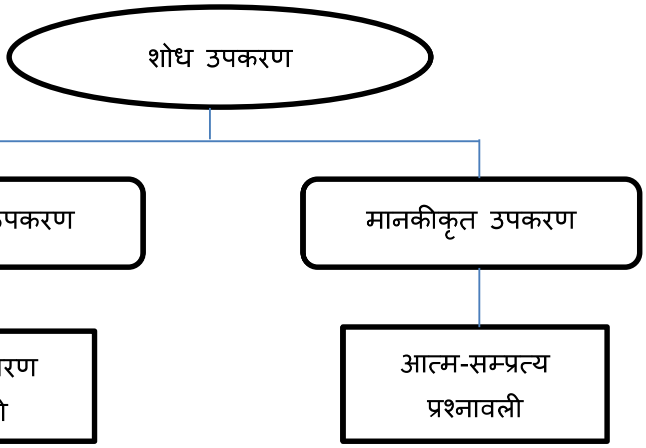


**सांख्यकीय विधियाँ**

**शोद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन हेतु आकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, चित्रात्मक प्रदर्शन, टी-परीक्षण का उपयोग किया जायेगा।**

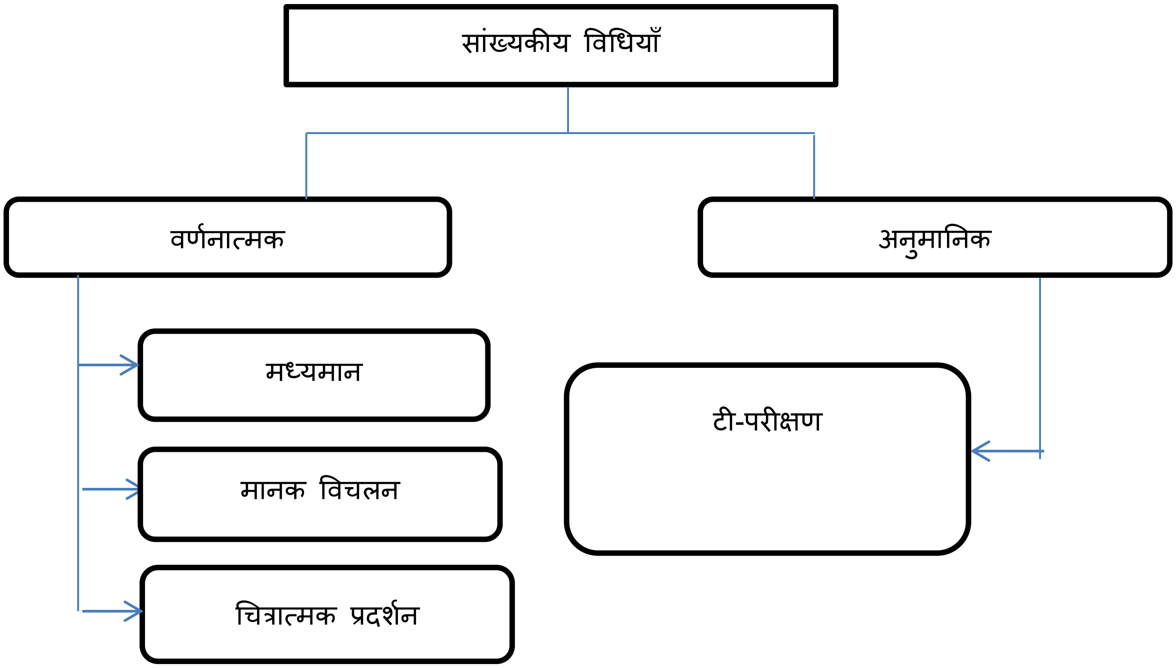

शैक्षिक निहितार्थ- प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम सार्थक प्राप्त होने पर शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित सहायता प्राप्त होगी -

1. शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रशासकों को शिक्षण पद्धति के रूप में कला एकीकृत शिक्षा के क्रियान्वयन के लिए प्रोत्साहित करने में सहायक होगा।
2. छात्रों के अधिगम को आसान एवं रूचिकर बनाया जा सकता है।
3. छात्रों को उनकी रूचि एवं व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर सीखने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।
4. छात्रों में पढ़ने के तनाव को कम करने में सहायक हो सकता है।
5. विद्यार्थियों में छिपी हुई प्रतिभाओं को बाहर लाने एवं उन्हें विकसित करने के लिए उत्तम हो सकता है।
6. देश, समाज तथा अपनी कला और संस्कृति को संरक्षित करने के लिए सहायक हो सकता है।
7. शिक्षा और शिक्षा प्रकियायों को उदार बनाने में सहायक हो सकता है।
8. शिक्षकों एवं छात्रों दोनों में रचनात्मकता का विकसित होगी।
9. शिक्षक और छात्रों के मध्य उच्च एवं उत्तम सम्बंध संस्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।
10. छात्रों को पाठ्य-पुस्तकों के बोझ से मुक्ति दिलाने में योगदान दे सकता है।
11. छात्रों को सीखने के लिए व्यक्तिगत प्रोत्साहन प्रदान करने में सहायक हो सकता है।
12. शिक्षकों को छात्रों की मूल अवधारणाओं को पहचानने और जानने में सहायता मिलेगी।
13. छात्रों को सैद्धान्तिक ज्ञान देने से अधिक व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।
14. छात्रों को ज्ञान के वास्तविक एवं प्रत्यक्ष अनुभवों से जोड़ने में मदद कर सकता है।
15. शिक्षण में होने वाली नीरसता कम करने या समाप्त करने में सहायक हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


- अग्रवाल, एन0 के0 और इस्लाम, एम0 ए0 (2015).नॉलेज रिटेंशन एण्ड ट्रांस्फर : हाउ लाइब्रेरीस मैनेज इम्पलायर्स लिविंग एण्ड ज्वाइनिंग.वी आ ई एन ई.द जर्नल ऑफ इनफॉरमेसन एण्ड नॉलेज मैनेजमेटं सिस्टम.45(2),150-171.
- अल-हैडिथी, टी0 एम0(2015). दी ट्रेडिशनल वर्सेस दी मॉडर्न ट्रांसलेशन क्लासरूम : ए नीड फार न्यू डाइरेक्शन इन द यू एई अण्डरग्रेजुएट ट्रांसलेशन प्रोग्रामस. ग्लोबल कॉनफ्रेसं अबु-धाबी(यू ए ई). अबु-धाबी यूनिवर्सिटी. Retrevied from https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/.05Nov2019.
- अली,एम0(2015).प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षण की विधा के रूप मे नुक्कड़ नाटक.ISSN 970-9312. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका. नोयडा : चन्द्र प्रभू ऑफसेट प्रिटिंग वर्क्स प्रा0 लि0 P.P. 34-36
- अब्दुल, एम0 एम0(2017). असिसमेण्ट ऑफ नॉलेज रिटेंशन एबिलिटी ऑफ अण्डरग्रेजुएट मेडिकल स्टूडेंट. आर्टिकल इन जर्नल ऑफ द लियाकत यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल एण्ड हेल्थ साइसं.16(2).Retrevied from https://www.researchgete.net/publication/319095803.24Oct2019.
- ईस्टवुड्स स्कूल(2019). स्कूल पाठ्यक्रम में कला और शिल्प का महत्व. Retrevied from http://eastwood.com/importance-arts-craft-school-curriculum/.17Ags2019.
- उत्तम,एम0 (2019). सी बी एस ई टू इंटीग्रेट आर्ट विद क्लासरूप लर्निगं प्रोसेस - Retrevied from https://www.jagranjosh.com/articles/cbse-to-integrate-art-with-classroom-learning-process-1554965935-1.26Feb2020
- एन इ आर डी सी (2016). मॉडर्न टीचिगं मैथड. जर्नल ऑफ एस्ययेलूसम एजुकेषन,सोसल इशू एण्ड ई-कामर्स. Retrevied from https://asaolusam.wordpress.com/2016/09/03/modern-teaching-method/amp.02Feb2020.

- ऐसेज(यू. के.)(2018). ट्रेडिशनल वर्सेज मॉडर्न मैथड्स ऑफ इफैक्टिव टीचिगं. Retrevied from https://www.ukessays.com/essays/education/traditional-versus-modern-methods-of-effective-teaching-education-essay.php?vref=1.26Feb2020.
- कोर्कमोज,टी0 एस0 एण्ड टॉय, बी0(2016). द इफैक्ट ऑफ कॉपरेटिव लर्निंग मैथड सिस्टमैटिक टीचिंग ऑफ स्टूडेंड अचीवमेंट एण्ड रिटेशन ऑफ नॉलेज सोसल स्टडीस लेशन. यूरेशियन जर्नल ऑफ नॉलेज एजूकेशनल रिसर्च.66.315-334. Retrevied from https://dx.doi.org/10.14689/rjer.24Oct2019
- कुमार, एन0. (2018). विभिन्न अवधि के माध्यमिक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता का उत्पाद एवं परिणाम संकेतकों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन. पी0एच0डी0 शोध रूप रेखा आगराः दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविधालय) P.P.1-40.
- चाई,सी0(2017) टीग्रेटिंग द आर्टस इन टू इग्लिंश लर्निंग : ए केस स्टडी ऑफ ई एफ एल लर्नर्स इन ए कनैडियन यूनीवर्सिटी. यूनिवर्सिटी ऑफ विडंर्स : इलेक्ट्रोनिक थिसिस एण्ड डिजर्टेशन. Retreived from https://scholar.uwindsor.ca/etd/5974. 24 Aug2019.
- टॉमल्जैनकोविक,जेड0(2015). एन इनटरेक्टिव अप्रोच टू लर्निगं एण्ड टीचिगं इन विजुअल आर्ट्स एजूशकेन. सेटंर फॉर एजुशकेन पॉलिसी स्टडीज जर्नल,5(3), 75.95.
- टायलर, जे0ए0, मोक, टी0 एण्ड अयूब, एस०(2014). आर्टस इण्टीग्रेशन इन द सोशियल स्टडीजः रिर्सच एण्ड परस्पेक्टिव फ्रॉम द फील्ड. ए जनरल ऑफ द सोशियल स्टडीजः Vol.75: No.1, Articles.Retrievedfrom http://thekeep.eiu.edu/the_councilor/vol75/iss1/5. 24Agu2019
- डीमॉश, के0 एण्ड मैरिस,डी0(2002). हाउ आर्टस इंटीग्रेशन सर्पोटस स्टूडेंट लर्निंग स्टूडेंटस शेड लाइट ऑन द कनेक्शन. यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क. पी डी फ.

- डॉ. शेंडकर, डी0 टी0(2019). इफैक्ट ऑफ ट्रेडीशनल टीचिंग एण्ड को-आपरेटिव लर्निंग मैथड ऑन लांग जम्प परफोर्मेन्स. रिर्सच पेपर. पुणे : मॉडर्न कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइसं एण्ड कॉमर्स, फिजिक्स डिपार्टमेटं. Retreived from https://www.academia-edu/9585355/effect_of_traditional_teaching_and_cooperative_learning_methods_on_long_jump_performance.05Nov2019
- डॉ. शर्मा, आर0 सी0(2018). ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ सम ट्रेडिशनल एण्ड मॉर्डर्न मैथोड ऑफ टीचिंग लर्निंग प्रोसेस. इटंरनेशनल जर्नल ऑन ऑर्ट मैनेजमेटं एण्ड ह्यूमनिस्टिक. 2319-5231.
- तेचुर एस0डी0(2017) द इफेक्ट ऑफ आर्ट इण्टीग्रेशन ऑन लिट्रेसी कॉम्प्रहेसिव अचीवमेंट. डाक्ट्रल डिजरटेशन. Retrieved From From https://schoolarcommons.sc.edu/etd/4205. 24Aug 2019.
- तुफेकी, एस0 और डेमिरल, एम0(2009). द इफेक्ट ऑफ ब्रेनबेस्ड लर्निंग ऑन अचीवमेंट, रिटेंशन, एटिट्यूड एण्ड लर्निंग प्रोसेस. प्रोसीडिया सोशल एण्ड बिहेविरल साइसंए 1, 1782.1791. Retrevied from www.sciencedirect.com.05Nov2019
- धनपाल,एस0, कननापथी, आर0 एण्ड मस्तान, जे0 (2014). ए स्टडी टू अण्डर स्टैण्ड द रोल ऑफ विजुअल आर्टस इन द टीचिंग एण्ड लर्निंग ऑफ साइस. जर्नल ऑफ एशिया-पैसफिक ऑन साइसं लर्निगं एण्ड टीचिगं,15(2).1-25.
- नोवाक(1998). ट्रेडिशनल वर्सेस मॉर्डन टीचिगं मैथड्स-इनोवेटिव टीचिगं मैथड एण्ड स्ट्रैटजीस. Retreited from https://innovativeteachingmethods.wordpress.com/about/traditional-teaching-methods/.26Feb2020.
- पुंजलाम, जे0 एफ0(2018). द इम्पैक्ट ऑफ विजुअल आर्ट्स इन स्कूटेंस एकेडमिक परफोर्मेन्स. इटंरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च,6(7).121-128.
- प्रतिभा (2016). दृश्य कला चित्रों की मनोविश्लेषणात्मक समीक्षा. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका. नोयडा : चन्द्र प्रभू ऑफसेट प्रिंटिगं वर्क्स प्रा0 लि0. P.P. 21-32

- फैक्लर, आर0 (2016). आर्ट इण्टीग्रेटेड एलीमेन्ट्री स्कूल क्लासरूमस एण्ड एकेडमिक सक्सेस. Retrieved From. https://10.15760/honors.243.24Aug2019.
- बल्लीउ, बी0 और बिल्शी, एम0(2017). मॉर्डन टीचिंग वर्सेस ट्रेडिशनल टीचिंग अल्बीनिया टीचर्स बिटवीन चैलंजेस एण्ड च्वाइस. यूरोपियन जर्नल ऑफ मल्टीडिस्प्लनरी स्टडीज,2(4).42-49.
- मेहरद,ए0 (2016). मिनी लिटरेचर रिव्य ऑफ सेल्फ-कॉन्सेप्ट. जर्नल ऑफ एजुकेशनल, हेल्थ एण्ड कमन्यूटीज साइकलोजी, 5(2).62-64. Retreited from. https://www.researchgate.net/ publication/315101634. 13Feb2020.
- कुमार, आर0(1996). प्राथमिक स्तर पर स्कूली बोझ की सार्थकता. अप्रकाशित लघु शोध. आगरा : दयालबाग शिक्षण संस्थान.P.7.
- रमन, आर0 एल0 और अच्युतन, के0(2014). सीरियस गेम बेस्ड अप्रोच टू साइबर सेक्यूरिटी कॉन्सेप्ट लर्निंग : इण्डियन कॉन्सेप्ट. कोल्लम : अमृता यूनीवर्सिटी : सेटंर फॉर रिसर्च इन एडवासड् टेक्नॉलाजी फॉर एजुकेशन.
- विकिपीडिया(2016).शिक्षा. Retreited from.https://hi.m.wikipedia.org/in/index.php?title=f'k{kk & oldid= f'k{kk.4346043. 05Nov2019.
- वेल्टमैन, डी0(2007). ए कम्परीजन ऑफ ट्रेडिशनल एण्ड एक्टिव लर्निंग मैथड : एन इम्पीरिकल इनवस्टीगेंशन यूटीलाजिंग ए लीनियर मिक्सड मॉडल. पीएच0 डी0 थिसिस. आरलिगंटन : द यूनीवर्सिटी ऑफ टैक्सेस - P.P. 12-45.
- स्टर्न्स,के0 एस0(2017). रिलेषनशिप बिटवीने सेल्फ-कॉनसेप्ट, टीचर एक्सेपटेशन एण्ड एकेडमिक अचीवमेण्ट रू एन एनालाइजिगं ऑफ सोसियल-इमोशनल वेल बीइगं एण्ड इट्स रिलेशन टू क्लासरूम

परफॉर्मेसं. अनपब्लिशड सर्टिफाइड ऑफ एडवासं स्टडी थिसिस, सेक्रेट हार्ट यूवर्सिटी फेयरफील्ड सी टी. Retreited from https://digitalcommons.sacredheart.edu/edl.19. 28Feb2020.

- स्टर्क, जे.सी0(2010). सेल्फ-कॉनसेप्ट एण्ड सेलफ-स्टीम इन एडोलेसंट्स विद लर्निगं डिसैबिलिटीस : द ग्रेजूएट स्कूल यूनिवर्सिटी ऑफ विसिटन-स्टाउट. Retreited from https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=http://www2.uwstout.edu/content/lib/thesis/2010/2010sternkej.pdf&ved=2ahUKEwji5ef2sM3nAhVnxDgGHaMyDjoQFjADegQIBRAB&usg=AOvVaw2eTfp2RCExIIx17D8XvaQW&cshid=1581558046266. 13Feb2020.
- ज्ञान,आर0 और डॉ बेहरा, के0(2018). सेल्फ-कॉनसेप्ट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएषन स्टूडेटंस रू एन इम्प्रीरिकल स्टडी. इटंरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एनालिटिकल रिव्यूज. 5(3).185-190. Retreited from- - https://ijrar.com/upload_issue/ijrar_issue_1616.pdf&ved=2anUKEwji5ef2sM3nAhVnxDgGHaMyDjoQFjAEegQIAhAB&usg=AOvVaw3Ik049G6f18AJf2eNR7cnz&cshid=1581557569136 13Feb2020.